नईदुनिया

डोनाल्ड ट्रम्प की कनाडा, ग्रीनलैंड और पनामा नहर पर क्या है मंशा..?

डॉ. विश्वास तिवारी

अमेरिका के 47 वें और सबसे बुजुर्ग डोनाल्ड ट्रम्प ने 20 जनवरी को दूसरी बार राष्ट्रपति पद की शपथ ली। डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने शपथ ग्रहण समरोह में क्वॉड के तीनों देशों (भारत, जापान और ऑस्ट्रेलिया) के विदेश मंत्रियों को आमंत्रित किया था, यानि की वो चीन को अलग करने के लिए क्वॉड पर ज्यादा ध्यान देंगे। एक ऐसा राष्ट्रपति जो कथित तौर पर अमेरिका को फिर से महान बनाने की घरेलू चुनौतियों से मुख्य रूप से चिंतित है, यह बहुत सारी विदेश नीति गतिविधियों का संकेत देता है, यानि पूरे विश्व की नजरे उन पर लगी हुई है। जैसे यूक्रेन पर रूस के युद्ध जिसे लगभग तीन साल हो गए है उसे रोकना, इजराइल और फिलीस्तीन में समझौता कराना और अप्रवासियों को वापस भेजने जैसे मुद्दे की अनिवार्यता का उल्लेख किए बिना डोनाल्ड ट्रम्प ने फ्लोरिडा की एक प्रेस वार्ता में कहा कि पनामा देश की पनामा नहर और डेनमार्क देश के ग्रीनलैंड दोनों को लेना और इतना ही नहीं ट्रंप ने कनाडा को अमेरिका के 51 वे राज्य के रूप में अमेरिका में विलय करने का विचार भी पेश किया। ट्रंप ने कहा कि पनामा और ग्रीनलैंड दोनों अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है और इसके लिए वह आर्थिक और सैन्य बल दोनों का इस्तेमाल करने से हिचकेंगे नहीं। पनामा और ग्रीनलैंड (डेनमार्क) दोनों ने इस बात को खारिज कर दिया है कि वो अपने देश को छोड़ेंगे।

पनामा नहर पनामा देश की आय का सबसे बड़ा स्त्रोत है और ग्रीनलैंड में खनिजों की भरमार है जिसमें अमेरिका खनन करना चाहता है। यह दुलर्भ खनिज मोबाइल फोन, इलेक्ट्रिक वाहन और हथियारों में इस्तेमाल होते है। ग्रीनलैंड एक बड़े अमेरिकी अंतरिक्ष केंद्र का भी घर है। ग्रीनलैंड की जनसंख्या मात्र 57,000 है। यह विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है तथा आर्कटिका क्षेत्र का रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा है। ट्रंप ने कहा कि यह द्वीप चीनी और रूसी जहाजों पर नजर रखने के सैन्य प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण है, जो हर जगह मौजूद है। यहां एक अमेरिकी सैन्य अड्डा भी है, विशाल तेल और गैस के भंडार भी है।

पनामा नहर पनामा देश की आय का सबसे बड़ा स्त्रोत है और ग्रीनलैंड में खनिजों की भरमार है जिसमें अमेरिका खनन करना चाहता है। यह दुलर्भ खनिज मोबाइल फोन, इलेक्ट्रिक वाहन और हथियारों में इस्तेमाल होते है। ग्रीनलैंड एक बड़े अमेरिकी अंतरिक्ष केंद्र का भी घर है। ग्रीनलैंड की जनसंख्या मात्र 57,000 है। यह विश्व का सबसे बड़ा द्वीप है तथा आर्कटिका क्षेत्र का रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हिस्सा है। ट्रंप ने कहा कि यह द्वीप चीनी और रूसी जहाजों पर नजर रखने के सैन्य प्रयासों के लिए महत्वपूर्ण है, जो हर जगह मौजूद है। यहां एक अमेरिकी सैन्य अड्डा भी है, विशाल तेल और गैस के भंडार भी है।

पनामा नहर उत्तर और दक्षिण अमेरिका को जोड़ती है इस नहर की लंबाई सिर्फ 82 किलोमीटर है। यह नहर 1914 में खोली गई थी। इस नहर में यातायात में लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा अमेरिका का है, जबकि दूसरा बड़ा उपयोगकर्ता चीन है। लेकिन नहर को पिछले कुछ सालो में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, जिसमें भयंकर सूखा भी शामिल है 2023 में कम जल स्तर के कारण प्रशासको को जहाज परागमन कम करने और टैक्स बढ़ाने को मजबूर होना पड़ा था।

इस बीच ट्रंप ने कनाडाई वस्तुओं पर अमेरिकी खर्च और कनाडा को सैन्य सहायता की आलोचना करते हुए कहा कि ऐसा करने से अमेरिका को कोई लाभ नहीं होता है और उन्होंने दोनों देशों के बीच की सीमा को 'कृत्रिम रूप से खींची गई रेखा' कहा।

यह सीमा दो देशों के बीच विश्व की सबसे लंबी सीमा है जिसका निर्धारण 1700 के दशक के अंत में अमेरिका की स्थापना के समय हुई संधियों के तहत किया गया था। ऐसा लगता है कि ट्रंप अमेरिका के भू भाग में वृद्धि को लेकर गंभीर है, क्योंकि कनाडा 41 मिलियन आबादी वाला और क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है।

ट्रंप ने कहा कि वह कनाडा पर आर्थिक बल लगाएंगे ताकि वह अमेरिका का 51वां राज्य बन जाए। कनाडा, हमारी कारें, हमारे कृषि उत्पाद कुछ भी न लें, इसलिए हम भी उनके उत्पाद नहीं लेंगे। हम मूल रूप से कनाडा की रक्षा करते है जिसके लिए हम हर साल सैकड़ों अरबों रूपये खर्च कर रहे है। हम व्यापार घाटे में हारते है। ट्रंप ने व्यापार में अमेरिका का शोषणा करने के लिए मैक्सिको की आलोचना की और ड्रग गिरोह से जुड़ी हिंसा की ओर इशारा किया। उन्होंने कहा कि हमारा मैक्सिको के कारण बहुत घाटा होता है और हम मैक्सिको की बहुत मदद करते है। उन्होंने कहा कि हम बहुत जल्दी बदलाव करने जा रहे है। उन्होंने यह भी कहा कि हम मैक्सिको की खाड़ी का नाम बदलकर अमेरिका की खाड़ी करना चाह रहे है। नवंबर में ट्रंप ने घोषणा की थी कि वह पदभार ग्रहण करने के बाद कनाडाई और मैक्सिकन वस्तुओं पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने की योजना बना रहे है, बशर्ते दोनों देश अमेरिका में प्रवासियों और नशीले पदार्थों के प्रवाह को रोक दें।

डोनाल्ड ट्रंप के निंदक भी मानते है कि उनका बहुत सा बड़बोलापन तो केवल सुर्खिया पाने के लिए होता है। कभी कभी वह राजनेताओं अथवा देशों से 'बेस्ट डील' पाने के लिए भी ऐसा करते है। अगर उनके पिछले कार्यकाल पर नजर डाले तो तो उन्होंने 20 जनवरी 2017 को पहले अश्वेत राष्ट्रपति बराक ओबामा को हराकर सत्ता हासिल की थी। उस समय भी अप्रवासियों पर नकेल कसने की बात कही थी। अनेक चुनौतियों के बावजूद पहले 100 दिन में सुधार की व्यापक योजना पेश कर अपने मतदाताओं की बीच लोकप्रियता कायम रखने में कामयाब रहे थे। हालांकि उनके तमाम वायदे तब भी पूरे नहीं हुए थे। अमेरिका की जमीन हड़पने की मंशा अगर सही है तो चीन की विस्तारवादी नीति पर रोक कैसे लगेगी? रूस की यूक्रेन पर या चीन की ताइवान पर या इजराइल की फिलिस्तीन पर दावे को वह गलत कैसे ठहरा सकते है? ट्रंप समर्थक 'मेक अमेरिका ग्रेट अगेन' के आंदोलन को भले ही सही ठहराते हो, लेकिन क्या इसका मतलब अब पूरे विश्व में 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' ही चलेगी। अगर ऐसा होगा तो फिर से पूरी दुनिया में शस्त्रों की होड़ शुरू हो जाएगी।

जिससे हर देश को अपने बजट का ज्यादा हिस्सा रक्षा बजट में खर्च करना होगा। इससे देशों की अर्थव्यवस्था को झटका लगेगा और स्वास्थ्य, शिक्षा और विकास कार्यों के लिए बजट कम पड़ेगा। क्या ऐसा करना संयुक्त राष्ट्र घोषणा पत्र का उल्लंघन नहीं है जो सभी देशों की सीमाओं और प्रभुसत्ता को बरकरार रखने की वकालत करता है।

अब ऐसा कहा जा सकता है कि आज की दुनिया में लोकतंत्र का लबादा ओढ़े विस्तारवादी और तानाशाही प्रवृत्ति के नेताओं की तादाद बढ़ती जा रही है। उन्होंने चीन पर अतिरिक्त दस फीसदी आयात कर थोपने की वकालत भी की है। अगर वो ऐसा करेंगे तो चीन को तो बढ़ा नुकसान होगा, लेकिन अमेरिका में भी महंगाई बढ़ेगी।

अमेरिका पिछले 50 वर्षों से विश्व का दरोगा बना हुआ था, लेकिन अब चीन के उभार, रूस का यूक्रेन पर आक्रमण, अभूतपूर्व राजकोषीय घाटा और डॉलर के सामने नई मुद्राओं की पेशकश ने अमेरिका के वर्चस्व को चुनौती दी है। लोगों को अमेरिका को फिर से विश्व का बेताज बादशाह बनाने के संकल्प के साथ ट्रंप ने यह चुनाव जीता है। अब उनके पड़ोसी देशों पर कब्जे के कदम ट्रंप-2 की दशा दिशा नही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की चाल, चरित्र और चेहरा भी तय करेंगे।

बसंत पंचमी : ज्ञान और कला की देवी मां सरस्वती को समर्पित पर्व

बसंत पंचमी (2 फरवरी) पर विशेष

योगेश कुमार गोयल

माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी 'बसंत पंचमी' के रूप में देशभर में धूमधाम से मनाई जाती रही है, जो इस वर्ष 2 फरवरी को मनाई जा रही है। इस वर्ष पंचांग के अनुसार, पंचमी तिथि 2 फरवरी को सुबह 9 बजकर 14 मिनट पर आरंभ होगी और 3 फरवरी को सुबह 6 बजकर 52 मिनट पर समाप्त होगी, इसलिए बसंत पंचमी का पर्व इस साल 2 फरवरी को मनाया जा रहा है। 2 फरवरी को बसंत पंचमी की पूजा का शुभ मुहूर्त सुबह 7 बजकर 1 मिनट से लेकर दोपहर 12 बजकर 35 मिनट तक रहेगा। सरस्वती पूजा का मुहूर्त प्रात: 7 बजकर 8 मिनट से प्रारंभ होगा और दोपहर 12 बजकर 34 मिनट तक रहेगा। बसंत पंचमी मध्याह्न का क्षण दोपहर 12:34 बजे होगा। इस वर्ष बसंत पंचमी पर भद्रा का साया रहने वाला है। भद्रा सुबह 7 बजकर 8 मिनट पर आरंभ होगी और सुबह 9 बजकर 14 मिनट तक रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में भद्रा को शुभ व मांगलिक कार्यों के लिए शुभ नहीं माना गया है।

माना जाता है कि बसंत पंचमी का दिन बसंत ऋतु के आगमन का सूचक है। शरद ऋतु की विदाई और बसंत के आगमन के साथ समस्त प्राणीजगत में नवजीवन एवं नवचेतना का संचार होता है। वातावरण में चहुं ओर मादकता का संचार होने लगता है। प्रकृति के सौंदर्य में निखार आने लगता है। शरद ऋतु में वृक्षों के पुराने पत्ते सूखकर झड़ जाते हैं, लेकिन बसंत की शुरुआत के साथ ही पेड़-पौधों पर नयी कोंपलें फूटने लगती हैं। चारों ओर रंग-बिरंगे फूल खिल जाते हैं, वातावरण महकने लगता है। बसंत पंचमी के ही दिन होली का उत्सव भी आरंभ हो जाता है और इस दिन पहली बार गुलाल उड़ाया जाता है।

साहित्य और संगीत प्रेमियों के लिए बसंत पंचमी का विशेष महत्व है, क्योंकि यह ज्ञान और वाणी की देवी सरस्वती की पूजा का पवित्र पर्व माना गया है। बच्चों को इस दिन से बोलना या लिखना सिखाना शुभ माना गया है। संगीतकार इस दिन अपने वाद्य यंत्रों की पूजा करते हैं। ऐसी मान्यता है कि इसी दिन विद्या और बुद्धि की देवी मां सरस्वती अपने हाथों में वीणा, पुस्तक व माला लिए अवतरित हुईं थी। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में इस दिन लोग विद्या, बुद्धि और वाणी की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती की पूजा-आराधना करके अपने जीवन से अज्ञानता के अंधकार को दूर करने की कामना करते हैं। कहा जाता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने बसंत पंचमी के दिन ही प्रथम बार देवी सरस्वती की आराधना की थी और कहा था कि अब से प्रतिवर्ष बसंत पंचमी के दिन देवी सरस्वती की पूजा होगी और इस दिन को मां सरस्वती के आराधना पर्व के रूप में मनाया जाएगा।

प्राचीन काल में बसंत पंचमी को प्रेम के प्रतीक पर्व के रूप में 'वसंतोत्सव', 'मदनोत्सव', 'कामोत्सव' अथवा 'कामदेव पर्व' के रूप में मनाए जाने का भी उल्लेख मिलता है। इस संबंध में मान्यता है कि इसी दिन कामदेव और रति ने पहली बार मानव हृदय में प्रेम की भावना का संचार कर उन्हें चेतना प्रदान की थी, ताकि वे सौन्दर्य और प्रेम की भावनाओं को गहराई से समझ सकें। इस दिन रति पूजा का भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि कामदेव ने बसंत ऋतु में ही पुष्प बाण चलाकर समाधिस्थ भगवान शिव का तप भंग करने का अपराध किया था, जिससे क्रोधित होकर उन्होंने अपने तीसरे नेत्र की ज्वाला से कामदेव को भस्म कर दिया था। बाद में कामदेव की पत्नी रति की प्रार्थना और विलाप से द्रवित होकर भगवान शिव ने रति को आशीर्वाद दिया कि उसे श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में अपना पति पुन: प्राप्त होगा।

'बसंत पंचमी' को गंगा का अवतरण दिवस भी माना जाता है। इसलिए धार्मिक दृष्टि से बसंत पंचमी के दिन गंगा स्नान करने का बहुत महत्व माना गया है। बसंत पंचमी को 'श्रीपंचमी' भी कहा गया है। कहा जाता है कि इस दिन का स्वास्थ्य वर्षभर के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। अत: इस पर्व को स्वास्थ्यवर्धक एवं पापनाशक भी माना गया है।

आचार्य चतुरसेनः लेखन से स्वत्व जागरण अभियान चलाया

रमेश शर्मा

सुप्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री की पुण्यतिथि (2 फरवरी) पर विशेष

स्वाधीनता के लिये संघर्ष जितना महत्वपूर्ण है उतना ही समाज में स्वत्व जागरण अभियान। यदि स्वत्ववोध नहीं होगा तो स्वतंत्रता की चेतना कैसे जागृत होगी। अपने लेखन से स्वत्व चेतना का यही अभियान चलाया आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने। उन्होंने अपना सार्वजनिक जीवन स्वतंत्रता संग्राम से आरंभ किया लेकिन शीघ्र ही आंदोलन से अलग होकर साहित्य से सामाजिक जागरण का अभियान चलाया। उन्होंने अपने रचना संसार से भारतीय समाज को अपने अतीत की गरिमा एवं गलतियों, दोनों से अवगत कराया। उनकी भाषा बहुत रोचक और प्रवाहमयी थी।

सुप्रसिद्ध रचनाकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री का जन्म 26 अगस्त 1891 को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के अंतर्गत ग्राम चांदोख में हुआ था। उनके पिता केवलराम ठाकुर अपने क्षेत्र के प्रभावशाली वैद्य थे और आर्यसमाज से जुड़े थे। माता नन्हीं देवी राजस्थान से थीं जो भारतीय परंपराओं एवं स्वाभिमान के प्रति समर्पित थीं। जब आचार्य चतुरसेन जी का जन्म हुआ तो परिवार ने उनका नाम चतुर्भुज रखा। उनकी शिक्षा-दीक्षा और आरंभिक जीवन इसी नाम से जाना गया। बालक चतुर्भुज की प्राथमिक शिक्षा पास के गाँव सिकन्दराबाद में हुई। आगे की शिक्षा के लिये जयपुर संस्कृत महाविद्यालय में प्रवेश लिया। 1915 में आयुर्वेदाचार्य एवं संस्कृत में शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। वे बचपन से बहुत भावुक और विचारशील स्वभाव के थे। इतने कल्पनाशील कि किसी घटना के एक-दो वाक्य सुनकर पूरा दृश्यांकन कर दें। लेखन का शौक बचपन से था। छोटी-छोटी कहानियां लिखा करते थे।

शिक्षा पूरी करने के बाद वे दिल्ली आ गए और आयुर्वेदिक चिकित्सालय आरंभ किया। संवेदनशील इतने थे कि गरीब और बेबस लोगों का इलाज नि:शुल्क किया करते थे। नतीजा हुआ कि उनका चिकित्सालय न चल पाया। रोगी तो आते रहे पर चिकित्सालय घाटे में रहा। लगातार घाटे के कारण चिकित्सालय को बंद करना पड़ा। उन्होंने पच्चीस रुपये के वेतन पर एक अन्य धर्मार्थ औषधालय में नौकरी कर ली। लगभग दो वर्ष के इस संघर्ष के बाद 1917 में वे डीएवी कॉलेज, लाहौर में आयुर्वेद के प्रोफेसर बने। यहाँ भी उनका तालमेल न बैठ सका और त्यागपत्र देकर राजस्थान के अजमेर आ गये। यहाँ उनके ससुरजी का औषधालय था। आचार्य चतुरसेन इसी औषधालय जुड़ गये। यहाँ उनके जीवन में स्थायित्व आया और लेखन कार्य को भी गति मिली। एक लेखक के रूप में उन्होंने अपना नाम चतुरसेन रखा और वे इसी नाम से प्रसिद्ध हुये।

साहित्य की प्रत्येक विधा में उन्होंने लेखन किया। उपन्यास, कहानी, गीत, संस्मरण, धार्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक जीवन, चिकित्सा, स्वास्थ्य और तिलस्मी विषयों पर भी लिखा। उनके संपूर्ण लेखकीय जीवन में उनके द्वारा सृजित और प्रकाशित रचनाओं की संख्या 186 है। जबकि कुछ कहानियाँ और अन्य रचनाएँ प्रकाशित नहीं हो सकीं, जिन्हें मिलाकर कुल संख्या साढ़े चार सौ से अधिक है। कहानियों और उपन्यासों में उनकी रुचि ऐतिहासिक घटनाओं के प्रति अधिक रही। वे ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से अतीत की विशेषताओं और वर्जनाओं दोनों के प्रति समाज को जागृत करना चाहते थे। उनकी भाषा शैली बहुत रोचक और जिज्ञासु थी। अपनी इसी विधा से ही वे अपने समय के सर्वाधिक लोकप्रिय उपन्यासकार माने गये।

स्वतंत्रता संग्राम में भागीदारी-दिल्ली और लाहौर में रहते अपने आरंभिक जीवन में आचार्य चतुरसेन शास्त्री स्वाधीनता आँदोलन से जुड़े। वे 1920 के असहयोग आँदोलन से जुड़े पर दो घटनाओं से उद्वेलित हुये। उनकी दृष्टि में असहयोग आंदोलन में खिलाफत आंदोलन को जोड़ना उचित नहीं था। दूसरा मालाबार हिंसा पर गाँधीजी की भूमिका पर भी उनकी असहमति थी। इसलिये वे स्वतंत्रता संग्राम से दूर हुये और उन्होने गाँधीजी की भूमिका पर व्यंग्य करते हुये लेखन आरंभ किया। साहित्य जगत में गाँधीजी पर यह पहली आलोचनात्मक रचना थी।

रचना संसार-आचार्य चतुरसेन शास्त्री का पहला उपन्यास 'हृदय की परख' 1918 में प्रकाशित हुआ। 1921 में सत्याग्रह और असहयोग विषय पर गांधीजी पर केन्द्रित आलोचनात्मक कृति आई, जो अपने समय की सर्वाधिक चर्चित रचना रही। उनके उपन्यासों की कुल संख्या बत्तीस है और लगभग सौ नाटक लिखे। उनके प्रमुख उपन्यासों में 'वैशाली की नगरवधू', 'सोमनाथ', 'वयं रक्षाम:', 'सोना और खून', 'आलमगीर' आदि अपने समय में काफी लोकप्रिय रहे। उनकी रचनाओं में ग्रामीण, नगरीय, राजसी और सामान्य सभी प्रकार की जीवनशैली की झलक मिलती है। वे पुराण, इतिहास, संस्कृत, मानव साहित्य और स्वास्थ्य विषयक साहित्य पर बड़ी गम्भीरता और ईमानदारी से लिखते रहे। उनके चिकित्सा एवं आरोग्य शास्त्रों में नारी केन्द्रित अधिक रहे। इनमें महिलाओं की चिकित्सा, आहार और जीवन शैली से स्वस्थ्य रहना, मातृकला तथा अविवाहित युवक-युवतियों के लिए आरोग्य आदि विषयों पर भी उनके ग्रंथों की संख्या एक दर्जन से अधिक है। एक रचना 'यादों की परछाई' को उन्होंने एक ऐसी आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किया जिसमें 'राम' के ईश्वरीय स्वरूप के बजाय पुरुषोत्तम स्वरूप पर केन्द्रित किया ताकि समाज में आदर्श जीवन कला विकसित हो।

'सोमनाथ', 'वयं रक्षाम:', 'वैशाली की नगरवधु', 'सह्याद्रि की चट्टानें', 'अपराजिता', 'केसरी सिंह की रिहाई', 'अमर सिंह', चार खंडों में 'सोना और खून', 'आलमगीर', 'धर्मपुत्र', 'खग्रास', 'मंदिर की नर्तकी', 'रक्त की प्यास', 'पत्थर युग के दो बुत', 'बगुला के पंख', 'हृदय की परख' आदि उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यास हैं। हालांकि उनके उपन्यासों में 'वैशाली की नगरवधू', 'वयं रक्षाम:' और 'सोमनाथ' को सर्वाधिक प्रसिद्धि मिली। 'वैशाली की नगरवधू' के बारे में उन्होंने खुद लिखा था, मैं अब तक की अपनी सारी रचनाओं को रद्द करता हूं और वैशाली की नगरवधू को अपनी एकमात्र रचना घोषित करता हूं। यह कृति साल 1957 में पहली बार छपी। तबसे अब तक न जाने इसके कितने संस्करण छप चुके। यूँ तो उनकी प्रत्येक रचना में व्यापक संदेश है, फिर भी दो रचनाओं का प्रस्तुतिकरण बहुत अलग है। एक उपन्यास 'गोला गोली' और दूसरा 'वयं रक्षाम:'। कुछ रियासतों में 'गोला-गोली' परंपरा थी। इस विसंगति पूर्ण प्रथा का चलन बढ़ गया था। राजमहलों में राजा-महाराजाओं और उनकी दासियों के बीच चलने वाली इस विसंगतिपूर्ण परंपरा पर उन्होंने उपन्यास लिखा और देश के गृहमंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल को समर्पित किया था। आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने इसके माध्यम से दासियों के प्रति मानवीय संवेदना और सम्मान को झकझोरा, इससे चेतना आई और यह प्रथा को समाप्त होने का वातावरण बना। दूसरा 'वयं रक्षाम:' उपन्यास रावण पर केन्द्रित है। किस प्रकार अधिकार भाव एक व्यक्ति को अहंकारी बनाता है उससे मानवीय मूल्यों के दमन की तस्वीर इस रचना में है।

पुरस्कार और प्रशस्ति का सामाजिक महत्व...

हृदयनारायण दीक्षित

प्रशस्ति और सम्मान स्वाभाविक इच्छा हैं। यश अभिलाषा स्वाभाविक ही है। यश स्मृति आनन्दित करती है। जीवन में अपमान और अपयश भी होते हैं लेकिन अपयश के प्रमाण पत्र या स्मृति ग्रंथ नहीं होते। यश सम्मान के प्रमाण पत्र होते हैं। ऐसे पदधारक प्रशस्ति पत्र या पुरस्कार प्रमाण पत्र अपने कमरे में सजाते हैं। चाहते हैं कि आगंतुक उन्हें देखें, पढ़ें, हमको प्रतिष्ठित जानें। सम्मान पत्र प्राय: इतने भर के लिए ही उपयोगी हैं। कुछ प्रतिष्ठित सम्मानीय उन्हें लौटा कर एक दफा और यश याचक हो जाते हैं। ऐसा कई दफा हुआ है। पुरस्कार, प्रशस्ति या सम्मान पत्र लोकहित के प्रेरक हैं।

सर्जक पुरस्कार के लिए ही सृजन नहीं करते। वे अपनी मस्ती और अनुभूति में सृजन करते हैं। सम्बन्धित संस्थाएँ या राजव्यवस्थाएँ उन्हें पुरस्कृत करती हैं। बेशक खेल आदि के प्रतियोगी पुरस्कार या मेडल को ध्यान में रखकर भी तैयारी करते हैं लेकिन कवि, सर्जक या कला के अन्य क्षेत्रों में सक्रिय लोगों के मन में समाज को प्रेमपूर्ण बनाने की इच्छा होती है। ऐसी प्रवृत्ति स्पष्ट दिखाई पड़ती है। पुरस्कार और प्रशस्ति का सामाजिक महत्व है। 'सर्वभूत हित' से जुड़े कर्म संस्कृति हैं। लोकमंगल सामूहिक अभिलाषा है। भारत का राष्ट्रभाव सांस्कृतिक है। लोकमंगल में सबको आश्वस्ति है। वैदिक परम्परा में स्वस्तिवाचन का महत्व है। इन्द्र से स्वस्ति की प्रार्थना है- स्वस्ति नो इन्द्र:। इन्द्र कल्याण करते हैं। इन्द्र सहित सारे देव कल्याण करते हैं। कल्याण करने वाले की प्रशस्ति स्वाभाविक है। यहाँ देव शब्द हटा दें तो समाज के सुख, स्वस्ति में कर्मरत मनुष्यों की प्रशंसा होनी चाहिए, होती रही है।

लोकमंगल समाज की स्वाभाविक अभिलाषा है। सुख स्वस्ति मुद-मोद-प्रमोद देने वाले महानुभावों की प्रशस्ति सामाजिक कर्तव्य है। जल जीवन है। ऋग्वेद में जल की प्रशस्ति है, जल में अमृत है, औषधियाँ हैं। ऋषि चाहते हैं कि देवों द्वारा भी जल की प्रशंसा हो। स्तुति है कि, हे देवों जल की प्रशंसा के लिए उत्साही बनो। पृथ्वी माता है और आकाश पिता है। ऋषि स्तुति है कि, दोनों प्रशस्ति सुनने के लिए हमारे पास आएँ।

मुझे भारत का पद्मश्री सम्मान घोषित किया गया है। हजारों मित्र बुके लेकर आ रहे हैं। अपरिचित और परिचित मित्र फोन से बधाई दे रहे हैं। प्रशंसा सबको अच्छी लगती है। जान पड़ता है कि ऋग्वेद के देवता प्रशस्ति सुनते हैं लेकिन वे भी 'द्यावा पृथ्वी' की प्रशंसा करते हैं। प्रशस्ति का क्षेत्र समाज है। प्रशंसा से मैं भी प्रसन्न होता हूँ। मेरे 5000 आलेख प्रकाशित हो चुके हैं और 2 दर्जन पुस्तकें भी। मेरा मुख्य कार्यक्षेत्र समाज है। मैंने अनजाने में ही अहैतुक आन्दोलन संगठित किए थे। संवेदनशीलता प्रेरित करती थी। प्रशंसा से उत्साह बढ़ता था। कवि होने की क्षमता होती तो विक्षुब्ध काव्य सृजन होता। मैं लिख सकता था, सो लिखा, लिखता रहा। जो किया सो लिखा और जो लिखा सो कर गुजरा। फिर राजनैतिक दलतन्त्र का भाग बना। राजनैतिक कार्यकर्ता के पुरस्कार दलतन्त्र की कोख से आते हैं। जनता ने तरुणाई में ही पुरस्कृत किया। मैं निर्दलीय विधायक चुना गया।

दलतन्त्र में पुरस्कार और तिरस्कार साथ-साथ चलते हैं लेकिन स्तम्भकारिता के चलते अनेक सरकारी-गैरसरकारी प्रशस्ति पत्र, पुरस्कार मिले। मैंने भी कुछ पुरस्कारों के प्रमाणपत्र दीवार में टांग रखे हैं। लेकिन इधर कुछ वर्षों से यह काम बंद है। ऐसे अवसरों के चित्र भी हैं। एक युवा पत्रकार ने मेरे लिखे पर पीएचडी भी की। इस प्रशस्ति ने मुझे आत्ममुग्ध किया था लेकिन अब दीवार पर टंगे ऐसे चित्र उल्लास नहीं देते। कभी-कभी लगता है कि इन चित्रों में मैं स्वयं दीवार पर टंगा हूँ। व्यतीत। चुका हुआ। दिनांक सहित होकर भी दिनांक रहित। प्रशस्ति नि:स्सन्देह प्रेरक है। यह आत्मनिरीक्षण का भी अवसर होती हैं। व्यक्ति की प्रतिष्ठा उसके अपने कर्म का ही परिणाम नहीं होती। समाज के आदर्श और परम्परा व्यक्ति पर प्रभाव डालते हैं। सूर्य चन्द्र भी प्रसाद देते हैं। ऐसे सैकड़ों कारक तत्व हैं। मुझे घोषित सम्मान व्यक्तिगत प्रयत्नों का परिणाम नहीं है।

सौभाग्यशाली अपने जीवनकाल में ही यश और प्रशंसा पाते हैं लेकिन अनेक महानुभाव जीवनकाल में प्रशंसा का सुख नहीं पाते। जीवन के बाद उन पर काव्य रचे जाते हैं, वे इतिहास का उल्लेखनीय भाग बनते हैं। तुलसी, वाल्मीकि आदि सर्जक जीवन न रहने के बाद यशस्वी हुए। सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रशंसा का सुख नहीं पा सके। मृत्यु के बाद वे अंतरराष्ट्रीय ख्याति के कवि जाने गए। मरणोपरांत सम्मान की भी परम्परा है।